जुमे का खुत्बा

दिनांक: 3 सफ़र 1448 हिजरी, मुताबिक़ 17 जुलाई 2026 ई.

{وَلَا تُسْرِفُوا}

फिज़ूलख़र्ची से बचें

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जो सारी दुनियाओं को पालने वाला है, जिसने न्याय का हुक्म दिया, संतुलन अपनाने वालों की तारीफ की, फिज़ूलखर्ची से मना फरमाया और माल उड़ाने वालों की निंदा करते हुए उन्हें शैतानों का भाई करार दिया। और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं है, जिसने अपनी स्पष्ट किताब में फरमाया:

وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ (الاعراف: 31)

"और हद से न बढ़ो, बेशक वह हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।" (सूरह अल्-आराफ़: 31)

और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और अमानतदार रसूल हैं, और तमाम नबियों और रसूलों में चुने हुए हैं। अल्लाह तआला की रहमतें और बेशुमार सलामती उतरे आप ﷺ पर, आपके पवित्र परिवार पर, आपके बरकत वाले सहाबा किराम पर, और क़यामत तक भलाई के साथ उनका अनुसरण करने वालों पर। ऐ अल्लाह के बंदो! मैं आपको और अपने आप को अल्लाह से डरने (तक़वा अपनाने) की वसीयत करता हूँ, क्योंकि तक़वा ही कामयाबी का रास्ता और नेकी व भलाई की राह है। अल्लाह तआला का आदेश है:

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ (الحشر: 18)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और हर जान को यह देखना चाहिए कि उसने कल क़यामत के लिए आगे क्या भेजा है, और अल्लाह से डरते रहो। बेशक जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे पूरी तरह ख़बरदार है।" (सूरह अल्-हश्रः 18)

मुसलमान भाइयो! हमारा यह महान दीन एक ऐसे संतुलित और सीधे रास्ते का प्रतीक है जो फिज़ूलखर्ची और कंजूसी की दो हदों के बीच स्थित है, और इसी संतुलन ने इसे एक विशेष स्थान दिया है। इस दीन ने जीवन के हर पहलू में संतुलन का निमंत्रण दिया है और हर काम में संतुलन का रास्ता अपनाने के लिए प्रेरित किया है, इसलिए इसमें न तो हद से आगे बढ़ना सही है और न ही कमी करना। अल्लाह तआला का आदेश है:

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَحْسُورًا (الإسراء: 29)

"और अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा हुआ न रखो (कि बिल्कुल ख़र्च न करो) और न ही उसे बिल्कुल खोल दो (कि सब कुछ लुटा दो), वरना तुम निंदा के पात्र और पछतावे का शिकार होकर बैठ जाओगे।" (सूरह अल्-इस्राः 29)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

كُلُوا، وَاشْرَبُوا، وَتَصَدَّقُوا، وَالْبَسُوا، مَا لَمْ يُخَالِطْهُ إِسْرَافٌ أَوْ مَخِيلَةٌ

"खाओ, पियो, दान करो और पहनो, जब तक कि उसमें फिज़ूलख़र्ची या घमंड शामिल न हो।" (इस हदीस को इमाम इब्न माजा ने रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने इसे हसन करार दिया है)

इमाम इब्न अल-क़य्यिम रहिमहुल्लाह इसराफ़ (फिज़ूलखर्ची) की परिभाषा बताते हुए फरमाते हैं: "इन सभी मामलों का नियम 'न्याय' है, और वह यह है कि इफ़रात (हद से बढ़ने) और तफ़रीत (कमी करने) के दो किनारों के बीच का रास्ता अपनाया जाए, और इसी पर दुनिया और आख़िरत की भलाइयों का दारोमदार है।"

इसलिए फिज़ूलखर्ची एक ऐसी बीमारी है जो समाज के लिए ख़तरा है, माल व दौलत और खज़ानों को बर्बाद करती है, और मुसीबतों तथा सज़ाओं को दावत देती है। यह

गुमराही की शाखाओं में से एक शाखा है, और इसके करने वाले लोग अल्लाह की नाराज़गी के हक़दार ठहरते हैं; अल्लाह तआला का फरमान है:

وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ (غافر: 43)

"और बेशक हद से गुज़रने वाले ही जहन्नमी (नरक वासी) हैं।" (सूरह अल्-ग़ाफ़िर:43)

ऐ अल्लाह के बंदो! हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में फिजूलखर्ची के विभिन्न रूप और नज़ारे पाए जाते हैं जिन्हें अक्ल और समझ वाले लोग कभी स्वीकार नहीं करते। इन प्रमुख नज़ारों में से एक खाने-पीने में हद से आगे बढ़ना है, ख़ासतौर पर दावतों और समारोहों में। खाना और पीना हालाँकि शरीर की ख़ुराक़ है, लेकिन जब यह ज़रूरत की हद से बढ़ जाए तो बीमारियों और तकलीफ़ों का कारण बन जाता है, और ऐसा व्यक्ति सुस्ती, अपच और कई बीमारियों का शिकार हो जाता है। इसलिए हज़रत मिक़दाम बिन मअदीकरिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फरमाते हुए सुना:

مَا مَلَأَ آدَمِيٌّ وِعَاءً شَرًّا مِنْ بَطْنٍ، بِحَسْبِ ابْنِ آدَمَ أُكُلَاتٌ يُقِمْنَ صُلْبَهُ، فَإِنْ كَانَ لَا مَحَالَةَ، فَثُلُثٌ لِطَعَامِهِ، وَثُلُثٌ لِشَرَابِهِ، وَثُلُثٌ لِنَفَسِهِ

"इंसान ने अपने पेट से बुरा कोई बर्तन नहीं भरा। इंसान के लिए बस कुछ निवाले ही काफ़ी हैं जो उसकी पीठ को सीधा रख सकें। अगर इससे ज़्यादा खाना ज़रूरी ही हो, तो पेट का एक तिहाई हिस्सा अपने खाने के लिए, एक तिहाई पीने के लिए, और एक तिहाई साँस लेने के लिए रखे।" (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने इसे सही करार दिया है)

इस्लामी भाइयो! फिजूलखर्ची का एक बड़ा रूप यह भी है कि सिर्फ दिखावे, देखा-देखी और खरीदारी के जुनून में आकर कपड़ों की अलमारियां महंगे और कीमती कपड़ों से भर दी जाएं, भले ही उनकी कोई ज़रूरत न हो। यह बीमारी खासतौर पर दावतों, महिलाओं की महफिलों और शादी-ब्याह के कार्यक्रमों में खुलकर सामने आती है। ऐसे शाही और बेहद महंगे कपड़े खरीदना जिन्हें शायद जिंदगी में सिर्फ एक ही बार पहनना

नसीब हो, साफ तौर पर फिजूलखर्ची है। यह एक ऐसी फालतू दौड़ है जिसका कोई मक़सद नहीं और ऐसा दिखावा है जिसकी शरीयत में कोई गुंजाइश नहीं है। उसी तरह, पैसे को बिना किसी मक़सद के बहाते रहना भी फिजूलख़र्ची का ही एक रूप है। इसकी शुरुआत आमतौर पर गैर-ज़रूरी चीजों और दिखावे से होती है और इसका अंत गुनाहों और हराम कामों पर होता है। इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं: 'ग़लत तरीके से पैसा कमाना और उसे ग़लत जगहों पर उड़ाना ही असल फिजूलखर्ची है।'

इसलिए, जब कोई मुसलमान ख़रीदारी के इस बेकाबू शौक का शिकार हो जाता है और अपनी इच्छाओं पर काबू नहीं रख पाता, तो यह आदत उसे और उसके बाल-बच्चों को तंगी और परेशानी में डाल देती है। कई बार इंसान ऐसे भारी क़र्ज के नीचे दब जाता है जो उसकी जिंदगी का सुख-चैन छीन लेता है, और वह दिन-रात क़र्ज चुकाने और इस दलदल से निकलने की चिंता में घुलता रहता है।

मेरे आदरणीय भाइयो! फिजूलखर्ची का एक बड़ा रूप पानी, बिजली और फोन व इंटरनेट का हद से ज्यादा इस्तेमाल भी है। इसका जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल घरों, दफ्तरों और सार्वजनिक जगहों पर आम देखा जा सकता है। गाड़ियों को धोने में पानी का बेहिसाब बहाना, खेतों और बागों को जरूरत से ज्यादा सींचना, और पानी के पाइपों के रिसाव (लीकेज) पर ध्यान न देना दिखाता है कि हम इस नेमत की कद्र से कितने बेखबर हैं। इसी तरह दिन के उजाले में लाइट जलाए रखना और बिजली का बेरहमी से इस्तेमाल पूरे समाज को ऐसी मुश्किलों में डाल सकता है जिनसे आसानी से बचा जा सकता था शर्त यह है कि लोग अपने व्यवहार को सुधारते और चीजों को जरूरत के मुताबिक इस्तेमाल करते।

ऐ अल्लाह के बंदो! आपको इस संबंध में नबी करीम ﷺ का आचरण देखना चाहिए। आप ﷺ के मुबारक दौर में मदीना मुनव्वरा पानी, खेती-बाड़ी और बाग़ों के लिहाज़ से काफ़ी ख़ुशहाल था, इसके बावजूद आप ﷺ एक 'साअ' (लगभग ढाई से तीन लीटर)

पानी से ग़ुस्ल (स्नान) फरमाते और एक 'मुद्द' (लगभग छह सौ मिलीलीटर) पानी से वुज़ू फरमाते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि एक देहाती व्यक्ति ने रसूलुल्लाह ﷺ के पास आकर वुज़ू के बारे में पूछा, तो आप ﷺ ने उसे अंगों को तीन-तीन बार धो कर दिखाया, फिर फरमाया:

هَذَا الْوُضُوءُ، فَمَنْ زَادَ عَلَى هَذَا فَقَدْ أَسَاءَ، أَوْ تَعَدَّى، أَوْ ظَلَمَ

"वुज़ू इस तरह है, अतः जिसने इससे ज़्यादा किया, उसने बुरा किया, या हद से आगे बढ़ा, या ज़ुल्म किया।" (इस हदीस को इमाम इब्न माजा ने रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने इसे हसन क़रार दिया है)

यह तो इबादत के मामले में नबी ﷺ का मार्गदर्शन है, तो ज़रा सोचिए उन मामलों का क्या हाल होगा जो इबादत नहीं हैं?!

मुसलमान भाइयो! पानी और बिजली का सही और सावधानीपूर्वक उपयोग एक धार्मिक और नैतिक कर्तव्य है। पानी एक बड़ी नेमत है, जिस से हम पीते हैं, पवित्रता हासिल करते हैं, और अपने खेतों तथा जानवरों को सींचते हैं। नबी करीम ﷺ ने पानी के इस्तेमाल में इसराफ़ से मना फरमाया है, चाहे इंसान किसी बहती हुई नहर के किनारे ही क्यों न खड़ा हो। इसलिए, ज़रूरत न होने पर नल बंद कर दिया करें, पानी के रिसाव (लीकेज) को ठीक करें, और वुज़ू या ग़ुस्ल में पानी बर्बाद न करें।

इसी तरह बिजली भी एक नेमत है जिसने हमारे जीवन को रौशन कर रखा है, इसलिए जब कमरों और उपकरणों का इस्तेमाल न हो तो उन्हें बंद करने का प्रबंध करें। बिजली बचाने वाले बल्ब इस्तेमाल करें और ज़रूरत से ज़्यादा एयर-कंडीशनर (AC) के उपयोग से बचें। इसमें माल की बचत है, बजट के लिए राहत है, देश से बोझ कम करने का कारण है, और इस नेमत को हमारे लिए लंबे समय तक क़ायम रखने का ज़रिया है; अल्लाह तआला का आदेश है:

وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا (الفرقان: 67)

"और वे लोग कि जब ख़र्च करते हैं तो न फिज़ूलखर्ची करते हैं और न कंजूसी से काम लेते हैं, बल्कि उनका ख़र्च करना इन दोनों के बीच संतुलन पर आधारित होता है।" (सूरह अल्-फ़ुरक़ानः67)

अल्लाह तआला मेरे और आपके लिए पवित्र क़ुरआन को बरकत वाला बनाए, और मुझे और आपको इसकी आयतों और हिकमत भरे ज़िक्र से फ़ायदा पहुँचाए। मैं अपनी यह बात कहता हूँ और अल्लाह तआला से अपने लिए और आपके लिए हर गुनाह की माफ़ी माँगता हूँ और उसी के दरबार में तौबा करता हूँ। अतः आप भी उसी से माफ़ी माँगें और उसी की तरफ़ पलटें; बेशक वह बहुत माफ़ करने वाला, अत्यंत दयालु है।

दूसरा खुत्बा

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और उसके चुने हुए रसूल हैं। अल्लाह तआला की रहमतें और सलामती नाज़िल हो आप ﷺ पर, आपके परिवार पर, आपके सहाबा पर और उन तमाम लोगों पर जिन्होंने आपसे मुहब्बत की।

हम्द ओ सलात के बाद: ऐ ईमानी भाइयो! अल्लाह से डरो, नेकी और भलाई करने वालों में शामिल हो जाओ, और फिज़ूलखर्ची तथा ज़्यादती के रास्ते से बचो, क्योंकि इसका अंजाम नाकामी और नुकसान के सिवा कुछ नहीं। अल्लाह तआला फरमाता है:

يَاعِبَادِ فَاتَّقُونِ (الزمر: 16)

"ऐ मेरे बंदो! मुझ ही से डरो।"

ऐ अल्लाह के बंदो! इतिहास के पन्ने कितने ही ऐसे आबाद और खुशहाल समाजों की दास्तानों से भरे पड़े हैं जिन्हें सच्चे लोगों ने बसाया था। उन्होंने उन्हें शानदार सुविधाओं के साथ बनाया और उनकी अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए उनके आस पास खेती, कारखानों, संपत्तियों और व्यापार का जाल बिछाया। मगर फिर उनकी जगह ऐसी अयोग्य पीढ़ियों ने ले ली जिन पर फिज़ूलखर्ची और ऐशो-आराम का प्रभाव हावी हो

गया। उन्होंने अपनी ख्वाहिशों की लगाम खुली छोड़ दी, यहाँ तक कि अपने पूर्वजों की छोड़ी हुई सारी विरासत को बर्बाद कर डाला। अंततः वे समाज तबाही की खाई में जा गिरे और उनकी औलाद को दर-ब-दर की ठोकरों और कड़वी मुसीबतों का सामना करना पड़ा।

इसका एक सबक सिखाने वाला उदाहरण अश्बीलिया का शासक 'मुअतमिद बिन अब्बाद' है, जो बेहद ऐशो-आराम की ज़िंदगी गुज़ारता था। उसने ऐशो-इशरत और मज़ों में इस कदर हद पार कर दी कि घमंड और फिजूलखर्ची के दलदल में जा गिरा। एक बार उसकी पत्नी ने महल के आस-पास कुछ गरीब औरतों को देखा जो कीचड़ में चलते हुए पानी बेच रही थीं। उसकी पत्नी और बेटियों को भी उनकी तरह कीचड़ में चलने की ख्वाहिश हुई। मुअतमिद ने उनकी यह ख्वाहिश पूरी तो की, लेकिन एक अजीब और शाही अंदाज़ में; उसने अंबर, कस्तूरी और कपूर मँगवा कर उन्हें गुलाब जल में मिलाने का हुक्म दिया, और उसमें कुछ केसर भी शामिल किया गया ताकि वह रंग-रूप में कीचड़ की शक्ल अख्तियार कर ले। फिर उसे महल के आँगन में बिछा दिया गया ताकि उसकी पत्नी और बेटियाँ उस (बनावटी और कीमती) कीचड़ में चल सकें। यह फिजूलखर्ची और शाही खर्चे की वह शर्मनाक तस्वीर है जिसे इतिहास ने सुरक्षित कर लिया है, ताकि उन लोगों के लिए सबक का सामान हो जिन्हें खुशहाली और संपन्नता की ज़िंदगी दी गई है।

फिर वक़्त बदला, मुअतमिद की बादशाहत का खात्मा हो गया, उसे अश्बीलिया से निकाल दिया गया, और मोरक्को के शहर 'अग्मात' में कैद करके उसकी सारी दौलत ज़ब्त कर ली गई। फिर ईद के दिन उसकी बेटियाँ फटे-पुराने कपड़ों में उससे मिलने आईं, तो अपनी, अपने परिवार और बेटियों की इस बुरी हालत पर उसका दिल भर आया और वह खुद को संबोधित करते हुए ये अशआर पढ़ने लगा:

فِيمَا مَضَى كُنْتَ بِالْأَعْيَادِ مَسْرُورًا
فَسَاءَكَ الْعِيدُ فِي أَغْمَاتَ مَأْسُورًا
تَرَى بَنَاتِكَ فِي الْأَطْمَارِ جَائِعَـــةً

يَـــغْزِلْنَ لِلنَّاسِ مَا يَمْلِكْنَ قِطْمِيرًا
يَطَأْنَ فِي الطِّينِ وَالْأَقْدَامُ حَافِيَـــةٌ
كَـــأَنَّهَا لَمْ تَطَأْ مِسْكًا وَكَافُـــورًا
مَنْ بَاتَ بَعْدَكَ فِي مُلْكٍ يُسَرُّ بِـــهِ
فَإِنَّـــمَا بَـــاتَ بِالْأَحْلَامِ مَغْرُورًا

"अतीत में तो तू ईद के दिनों में बहुत खुश हुआ करता था, लेकिन आज अग्मात की कैद में यह ईद तुझे रुला रही है। तू अपनी बेटियों को भूखा और फटे-पुराने कपड़ों में देख रहा है, जो (पेट पालने के लिए) लोगों के लिए सूत कात रही हैं और उनके पास एक कौड़ी भी नहीं है। आज वे नंगे पाँव असली कीचड़ में चल रही हैं, मानो उन्होंने कभी कस्तूरी और कपूर पर क़दम ही न रखे हों। तेरे बाद जो आदमी भी अपनी बादशाहत पर खुश होता है, वह केवल ख्वाबों के धोखे में जी रहा है।"

ऐ अल्लाह! हमें फिजूलखर्ची और माल उड़ाने से बचा, हमारे अंगों और माल को खराबी और लापरवाही से महफूज़ रख, हम पर अपनी नेमतें हमेशा कायम रख, और हमें अपनी नाराज़गी और अज़ाब से बचा, ऐ तमाम जहानों के पालनहार! ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों को माफ़ कर दे; चाहे वे ज़िंदा हों या वफात पा चुके हों। ऐ हमारे रब! हमसे हर तरह की आज़माइश, महामारी, तकलीफ़ और तंगी को दूर फरमा दे, हम पर अपनी नेमतें लंबे समय तक क़ायम रख, और हमसे सज़ाओं को टाल दे। हमारे नफ्स को पवित्र कर दे, तू ही उन्हें सबसे बेहतर पवित्र करने वाला है।

ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई प्रदान कर और आख़िरत में भी भलाई अता फरमा, और हमें दोज़ख़ की आग के अज़ाब से बचा। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके उत्तराधिकारी को उन कामों की तौफीक दे जिन्हें तू पसंद करता है और जिनसे तू राज़ी होता है, और नेकी तथा परहेज़गारी की तरफ उनका मार्गदर्शन फरमा। और इस देश को अमन व सुकून और उदारता व खुशहाली वाला बना दे, और अन्य तमाम इस्लामी देशों को भी। (आमीन)

जुमा खुत्बा तैयार करने वाली कमेटी